बेटीवाला प्यार

डॉ. ज्योति पुंज

बेटीवाला प्यार

डॉ. ज्योतिपुंज

(Estd : 1939)
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001:2000 प्रकाशक

प्रकाशक • प्रभात प्रकाशन™
4/19 आसफ अली रोड
नई दिल्ली-110002
तत्त्वावधान • भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • प्रथम, 2008
मूल्य • बीस रुपए
मुद्रक • नरुला प्रिंटर्स, दिल्ली

BETIWALA PYAR *by* Dr. Jyoti Punj Rs. 20.00
Published by Prabhat Prakashan, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2 (INDIA)
ISBN 978-81-7315-617-5

बेटीवाला प्यार

मुझे मेरे प्यार का संसार चाहिए।
बेटीवाला मुझको भी प्यार चाहिए॥

सपने सुहाने मेरे खिल जाएँगे,
सीपियों में मुझे मोती मिल जाएँगे।
कली जो खिलेगी मेरे अँगना कभी,
बजेंगी पायल और कंगना तभी।
खुशबू उठेगी औ' आनंद आएगा,
घर का तो कोना-कोना मुसकाएगा।
दुनिया का प्यार यह अपार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 1॥

रोएगी तो सीने से लगाऊँगा उसे,
थपकियाँ दे-दे के सुलाऊँगा उसे।
हँसेगी हँसाएगी, लुटाएगी खुशी,
सूनी मेरी दुनिया में आएगी खुशी।
रोएगी तो कलेजा पुकार उठेगा,

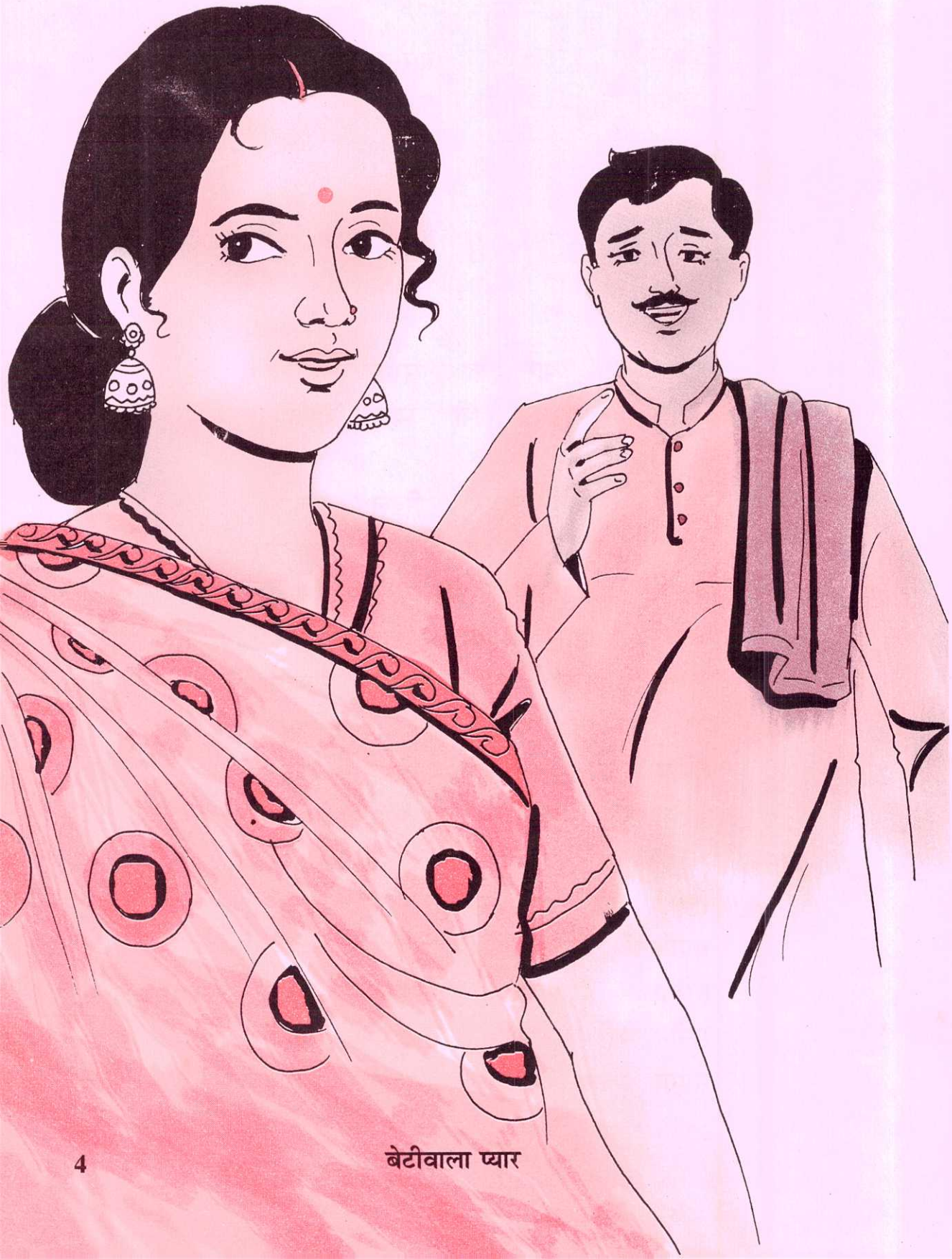

रोम-रोम से भी तार-तार उठेगा।
बेटीवाली दुआएँ हजार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 2॥

जिस किसी घर में भी बेटी नहीं है,
फूटे भागवाला है जो बेटी नहीं है।
कड़वा लगेगा कौर-कौर खाने का,
अर्थ नहीं कमाने के ताने-बाने का।
प्यारी-प्यारी बिटिया सलोनी चाहिए,
घर में तो बिटिया भी होनी चाहिए।
फूलों जैसी गुड़िया का हार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 3॥

बेटी का जो बाप है वो जीना सीखेगा,
बेटीवाला बाप गुस्सा पीना सीखेगा।
जिम्मेदारी वाला वो सम्मान मिलेगा,
आँखों की शरमवाला मान मिलेगा।
बेटी का हो बाप तो ये समझेगा वो,
पराई बेटी को 'बेटी' समझेगा वो।
मन भटकाव को आधार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 4॥

बेटियोंवालों का घर हरा-भरा है,
बेटी बिन मेरा घर मरा-मरा है।

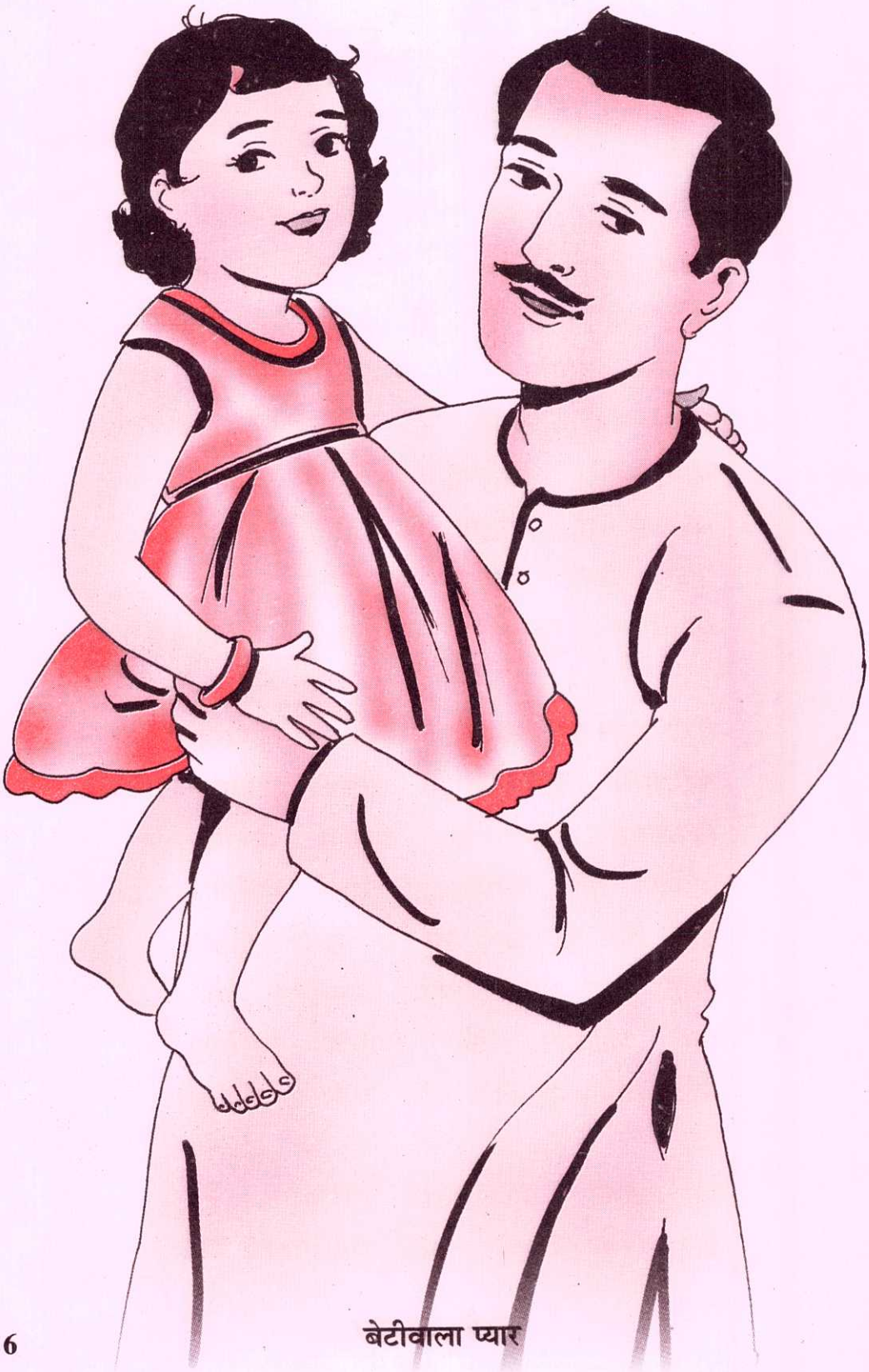

माता बेटी वाले हेल-मेल ना देखे,
गुड्डे-गुड़ियों के कभी खेल ना देखे।
कौन रूठकर मुझसे कुट्टी करेगी?
चुपके से आके कौन मुट्ठी भरेगी?
गूँजे सूने घर में सितार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 5॥

अँगना की तुलसी को कौन सींचेगा?
चुपके से मेरी आँखें कौन मींचेगा?
बिन बेटी कैसे हो आराधना मेरी?
कैसे शुरू करूँगा कोई साधना मेरी?
गंदगी जो घर में बुहार करेगी,
कौन बेटी अँगना बुहार करेगी?
धरती में सीताजी का सार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 6॥

बेटी बिन कैसे परिवार बनेगा?
रिश्तेदारी बिना घर भार बनेगा।
मन को मनाएँ कैसे बहलाने को,
तरसेंगे नाना-नानी कहलाने को।
दोहिती-दोहितों का तो नाम सुना है,
पोती-पोते होना कोरा झुनझुना है।
बेटे को भी बहना का प्यार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 7॥

दु:खी माँ का कैसे होवे सपना पूरा,
बेटी बिन कोख का सम्मान अधूरा।
अंदरूनी दु:ख माता किसे कहेगी?
बतियाँ जो मन की हैं किसे कहेगी?
औरत का लड़की सहारा होती है,
माता के मीटर का वह पारा होती है।
घरवाली को भी तो संसार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 8॥

भानजों के बिन फीके स्वाद ही सारे,
कौन आके बेटे को तो मामा पुकारे।
जीजा बिन बेटा कैसे साला बनेगा,
भानजी जो होगी तो मसाला बनेगा।
त्योहारों पे कौन आके झाँकी बाँधेगी?
कौन आके बेटे को तो राखी बाँधेगी?
भाई-बहनों को तो बहार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 9॥

तुतली जुबाँ से बातें कौन करेगी?
कौन आके दादी माँ की चोटी करेगी?
पोती बिन बिगड़ा बुढ़ापा माई-बाप,
कर्ज ना चुकाया मैंने मेरे माई-बाप!
बिटिया का सुख ही तो आस थी मेरी,
दोहिती ना दी तो दु:खी सास भी मेरी।

बुजुर्गों को बेटी मनवार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 10॥

बीमारी में बिटिया से गोली चाहिए,
दीवाली के दिन तो रंगोली चाहिए।
शादी-ब्याह में भी गीत कौन गाएगा?
रतजगा नौता देने कौन जाएगा?
माता को भी घर में सहारा चाहिए,
हाथ जो बँटाए वह इशारा चाहिए।
बीमारी में प्यार तो अपार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 11॥

बेटी ना होगी तो भात कैसे भरेंगे?
बिटिया का मायरा भी कैसे करेंगे?
कमाई करेंगे क्या अकेले खाएँगे?
बिना बेटी मुक्ति भी तो कैसे पाएँगे?
मेहमान घर में भी कौन आएँगे?
कौन से दामाद आके फरमाएँगे?
कोठी-बँगले, ना मुझे कार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 12॥

बेटे-बहू भी तो किसे बुलवाएँगे?
मेहमान आए किसे मिलवाएँगे?
घर की अकेली ये दीवारें रोएँगी,

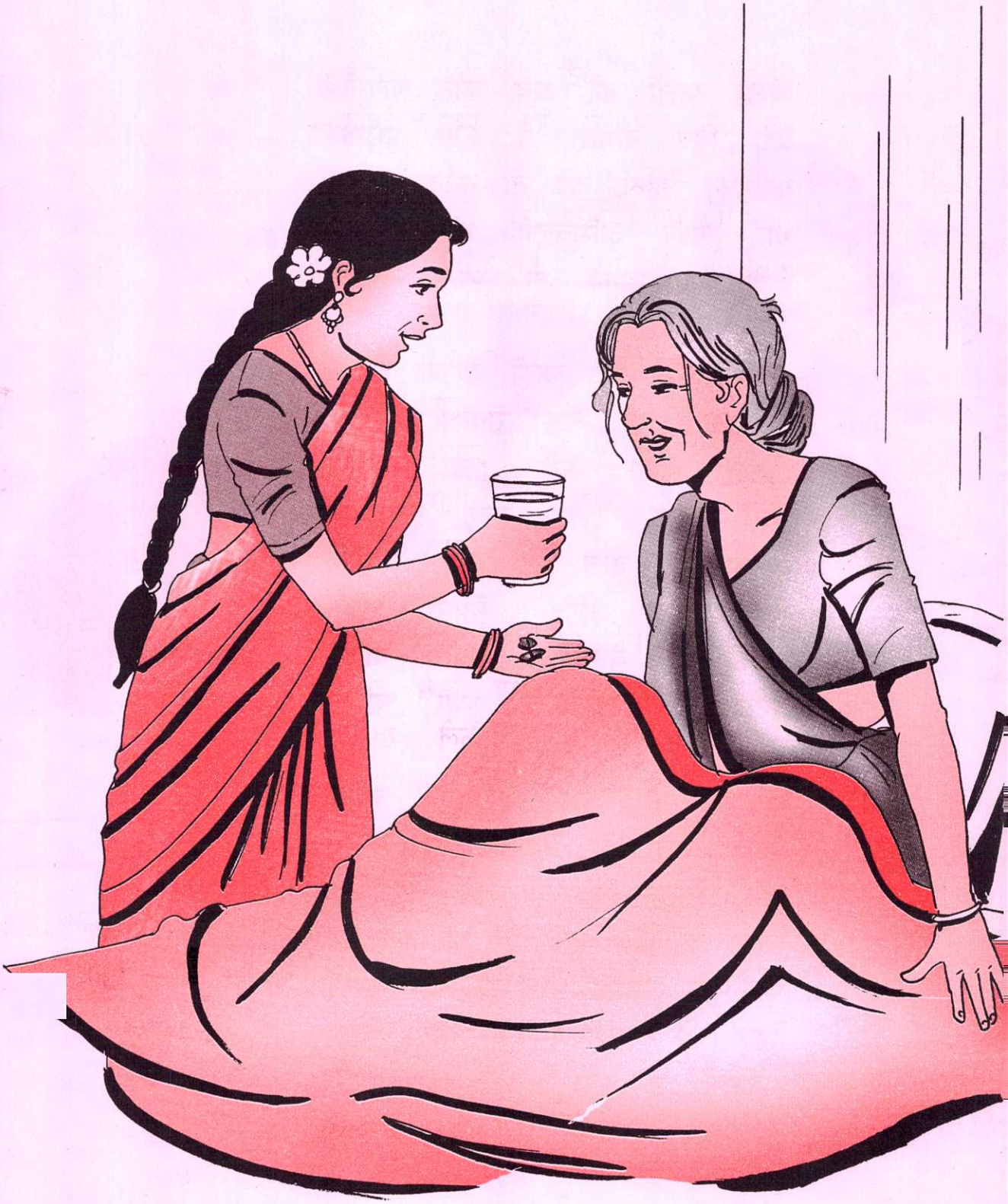

बिखरे फूलों को अब कौन पोएगी?
बेटी बिन बीमारी में कौन पूछेगा?
घर की पहेली को तो कौन बूझेगा?
भीगे गाल आँसूवाली धार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 13॥

बेटियों की शादी कहीं देखता हूँ मैं,
सुबकता दिल कैसे रोकता हूँ मैं।
तोरण बँधेगा कैसे दूल्हा आएगा,
कहाँ जाके दूल्हा फिर इतराएगा?
अँगना में ढोल ना नजारा रहेगा,
बेटी बिना अँगना कुँवारा रहेगा।
दूसरों की बेटी ना उधार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 14॥

काश! मेरे घर शहनाई बजेगी,
मेहँदी लगा के बिटिया भी सजेगी।
होते अरमान बिटिया की शादी के,
शरमा के पाँव छूती वो भी दादी के।
पढ़ा के लिखा के होशियार करता,
दहेज के लोभियों पे वार करता।
लोभियों पे पढ़ा-लिखा वार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 15॥

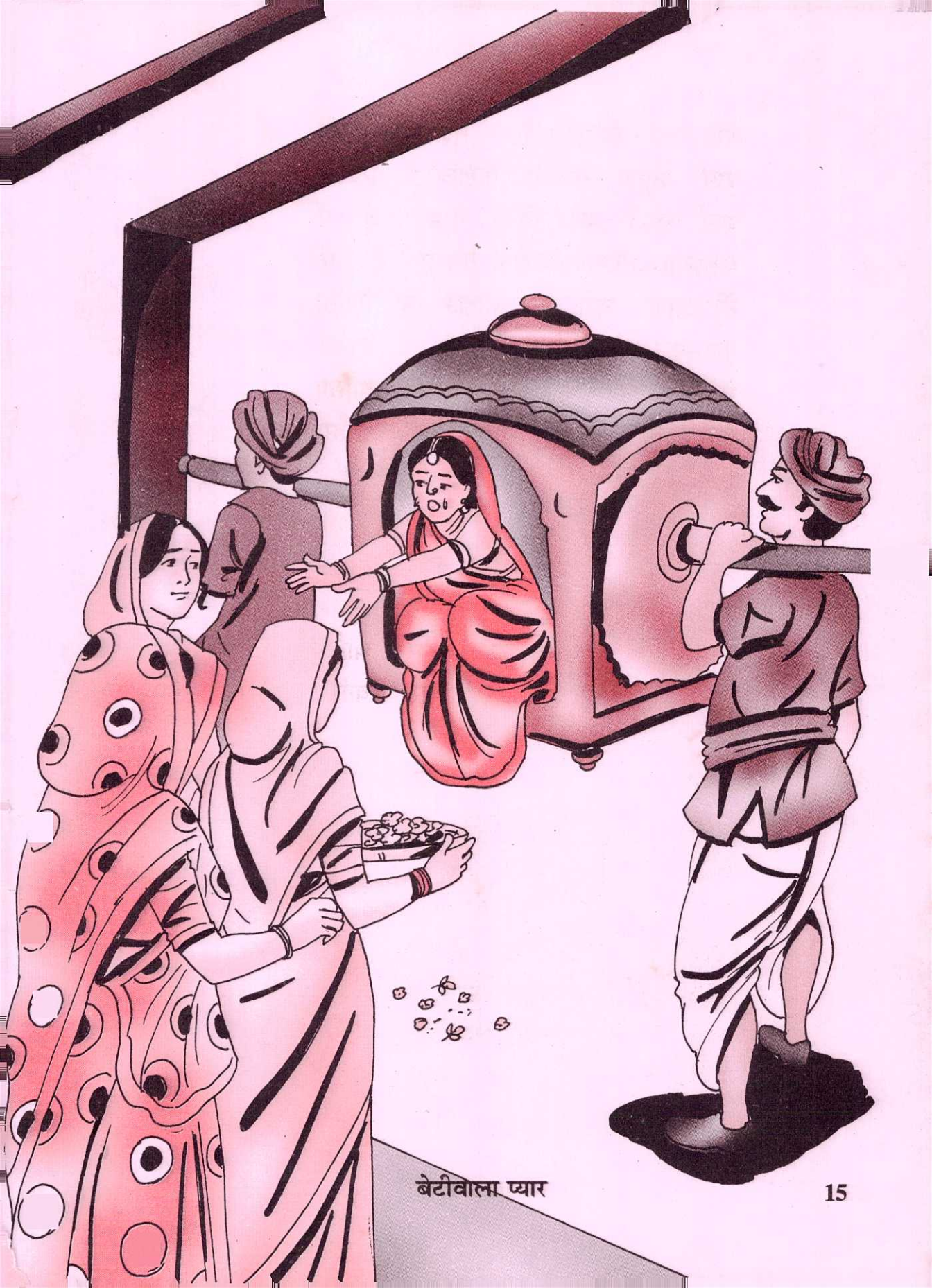

बेटी की विदाई वेला मुझे न मिली,
पुष्प अर्पण करूँगा कली न खिली।
पराई बेटी की विदा देखता हूँ मैं,
धड़कता दिल कैसे रोकता हूँ मैं!
मेरे फूटे भाग में विदाई न लिखी,
फूट-फूट रोऊँ ऐसी स्याही न लिखी।
बेटी के ही प्यार का आधार चाहिए,
बेटीवाला मुझको तो प्यार चाहिए॥ 16॥

□□□

आमुख

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली ने नवसाक्षरों की आवश्यकताओं, अभिरुचियों और अपेक्षाओं के अनुरूप साक्षरता-साहित्य के निर्माण में नवाचार की पहल की है। हिंदीभाषी क्षेत्रों के नवसाक्षरों की पहचान की रोशनी में प्रौढ़ साक्षरता में लेखनरत साहित्यकारों, समाजार्थिक-चिंतकों, प्रौढ़ शिक्षा विशेषज्ञों तथा सतत शिक्षा केंद्रों के अनुभवी आयोजकों ने 23-24 अगस्त, 2007 की अवधि में भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ में आयोजित विचार गोष्ठी में नवसाक्षरों के लिए उपयोगी साहित्य-लेखन पर गहन विचार-विमर्श किया।

साक्षरता-सामग्री के पाठ्य विवरण पर संगोष्ठी में सम्मिलित विषय विशेषज्ञों में सहमति हुई। साक्षरता सामग्री के तीन प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए। पहला उद्देश्य, जो नवसाक्षरों की साक्षरता को सजीव बनाने और आगे बढ़ाने में सहायक हो; दूसरा उद्देश्य, जो जन-कल्याण और सामूहिक कार्य-संस्कृति को बढ़ावा देनेवाला हो, ताकि सब लोग मिल-जुलकर रहते हुए विकास की ओर बढ़ें। तीसरा उद्देश्य, जो अपने अधिकारों और कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक हित के लिए उन्हें प्रेरणा दे सके, जिससे उनका कल्याण, समाज का हित और राष्ट्र का विकास होता रहे।

इस प्रौढ़ साक्षरता साहित्य कार्यशाला में डॉ. ज्योति पुंज द्वारा लिखित पुस्तक **'बेटीवाला प्यार'** नवसाक्षरों को जागरूक पाठक बनाने और विकास के क्षेत्र में उन्हें आगे बढ़ाने के अवसर प्रदान करेगी। इसका संप्रेषण और भाषा स्तर भी प्रौढ़ नवसाक्षरों में जाँच लिया गया है। इस पुस्तक का विधिवत् क्षेत्र-परीक्षण करा लिया गया है। इस पुस्तक में नवसाक्षरों के सामाजिक सरोकारों को प्राथमिकता दी गई है। हमारा विश्वास है कि यह पुस्तक निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति में अवश्य सफल होगी।

इसे प्रकाशित करने में और इसे नवसाक्षरों तक पहुँचाने में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ने जो सहयोग प्रदान किया है, हम उसके लिए हृदय से आभारी हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि प्रभात प्रकाशन ने इस शृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन एवं वितरण का दायित्व स्वीकार किया है। इस पुस्तक के पाठकों से हमें जो सुझाव प्राप्त होंगे, हम उनका स्वागत करेंगे।

17-बी, इंद्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002

—डॉ. मदन सिंह
महासचिव, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001 : 2000 प्रकाशक